संस्कृतशास्त्राधारित मानवीय कर्म की विश्लेषण विधि

आशुतोष आङ्गिरस,
प्रवक्ता, संस्कृत विभाग,
सनातन धर्म कालेज (लाहौर),
अम्बाला छावनी।

निर्देश:- १. 'क' का अर्थ है- 'हां', 'ख' का अर्थ- 'कुछ हाँ कुछ ना', 'ग' का अर्थ- 'ना' है।

२. कृपया उत्तर विचारपूर्वक ईमानदारी से दीजिए, नहीं तो निष्कर्ष सही नहीं आएगा।

३. प्रश्नावली चार विभागों में विभाजित है- शारीरिक कर्म, मानसिक कर्म, वाचिक कर्म तथा कार्मिक स्वभाव ।

४. 'क' का कुल योग अधिक होने पर कर्म की दृष्टि से मनुष्य 'अशुक्ल' कर्म वाला है ।

५. 'ख' का कुल योग अधिक होने पर कर्म की दृष्टि से मनुष्य 'शुक्लाशुक्ल' कर्म का है ।

६. 'ग' का कुल योग अधिक होने पर कर्म की दृष्टि से मनुष्य 'शुक्ल' कर्म का है।

७. निष्कर्ष निकालने के लिए पहले 'क' का कुल योग निकालें, फ़िर 'ख' का तत:'ग' का कुल योग निकालें, फ़िर तीन से गुणा करें।

कृपया चिह्नित करें- आयु- अवयस्क/ वयस्क, स्त्री/ पुरुष, शिक्षित/ अशिक्षित, ग्रामीण/नागरिक, आर्थिकस्थिति- दरिद्र/मध्यम-धनी/धनी, जाति (संविधान के अनुसार)- आरक्षित/अनारक्षित, धर्म- हिन्दू/सिक्ख/ जैन/बौद्ध/ईसाइ/मुस्लिम/अन्य, मान्यता- नास्तिक/आस्तिक
आजीविका- वृत्त्युपजीवि (राज्याश्रित/गैर-राज्याश्रित)/श्रेष्ठी/साहसी/राजनीति
जीवन अवस्था- बाल/किशोर/युवा/प्रौढ/वृद्ध/अतिवृद्ध, स्वास्थ्य – रुग्ण/स्वस्थ/रुग्ण+स्वस्थ

शारीरिक कर्म

1. मैं विधि रहित हिंसा करता हूं।(अभिधानत: हिंसा) क, ख, ग
2. मैं बिना दिया हुआ धन लेता हूं।(अदत्तानाम् उपादानम्) क, ख, ग
3. मैं परस्त्री की सेवा करता हूं।(परदारोपसेवा/निषेवणम्) क, ख, ग
4. मैं अगम्या स्त्री के साथ समागम करता हूं।(अगम्यागमनम्) क, ख, ग
5. मैं प्राणी-वध करता हूं।(वधबन्ध) क, ख, ग
6. मैं बन्धन एवम् क्लेशों द्वारा प्राणियों को सताता हूं।(परप्राणोपतापनम्) क, ख, ग
7. मैं बलात् पराये धन की चोरी, अपहरण,नाश करता हूँ।(चोर्य परेषां द्रव्याणां हरणं, नाशनं) क, ख, ग
8. मैं अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करता हूँ।(अभक्ष्यभक्षणं) क, ख, ग
9. मैं दुर्व्यसनों में आसक्त रहता हूँ।(व्यसनेषु अभिषंगता) क, ख, ग
10. मैं दर्प, अभिमान और उद्दण्ड्ता से दूसरों को सताता हूँ।(दर्पात् अभिमानात् परेषां उत्तापनम्) क, ख, ग
11. मैं न करने योग्य कार्य करता हूँ।(अकार्याणाम् करणम्) क, ख, ग
12. मैं अपवित्र वस्तु का सेवन करता हूँ।(अशौचं पानसेवनम्) क, ख, ग
13. मैं पापियों के सम्पर्क से दुराचार करता हूँ।(दौशील्यं पापसम्पर्के) क, ख, ग

14. मैं पाप कर्म मे सहायता करता हूँ। (साहाय्यं पापकर्मणि) क, ख, ग
15. मैं अपयश देने वाले कार्यों को करता हूँ।(अधर्मयम् अयशस्यं) क, ख, ग
16. मैं जैसा देखा या सुना गया हो, बिना परिवर्तन के वैसा ही करता हूँ।(तस्याविकारेण वचनं) क, ख, ग
17. मैं मेरी यज्ञ-कार्य नित्यशः करता हूँ।(यज्ञीयः) क, ख, ग

<u>मानसिक कर्म</u>

18. मैं पराए धन को अन्यायपूर्वक/अनुचित रूप से ग्रहण करने का विचार करता हूँ।(परद्रव्येषु अभिधानम्) क, ख, ग
19. मैं मन से अनिष्ट की चिन्ता करता हूँ।(अनिष्ट चिन्तनं) क, ख, ग
20. मैं मिथ्या आग्रह करता हूँ।(वितथ अभिनिवेश) क, ख, ग
21. मैं दूसरे से धोखा करता हूँ।(अभिद्रोहः) क, ख, ग
22. मैं दूसरे से ईर्ष्या करता हूँ।(असूया) क, ख, ग
23. मैं दूसरे के धन की अभिलाषा करता हूँ।(परार्थेषु स्पृहा) क, ख, ग
24. मैं धर्म-कार्य में अश्रद्धा करता हूँ।(धर्मकार्येषु अश्रद्धा) क, ख, ग
25. मैं पाप-कर्म में हर्ष अनुभव करता हूँ।(पापकर्मणि हर्षणम्) क, ख, ग
26. मैं फ़ल की इच्छा रखकर कार्य करता हूँ।(कर्मफ़लप्रेप्सु) क, ख, ग
27. मैं मारण-उच्चाटन आदि कार्यों में रुचि रखता हूँ।(शठः) क, ख, ग
28. मैं बुरा कार्य (अभिचारादि) करके दूसरे का अनर्थ सोचता हूँ।(दीर्घसूत्री) क, ख, ग
29. मैं कर्तव्य और अकर्तव्य जाने बिना कार्य करता हूँ।(कार्याकार्ये) क, ख, ग
30. मैं जय और पराजय दोनों में एक समान रहता हूँ।(जयाजयौ समः) क, ख, ग

<u>वाचिक कर्म</u>

31. मैं व्यवहार में कठोर वचन बोलता हूँ।(पारुष्यवचनं) क, ख, ग
32. मैं मिथ्या-भाषण करता हूँ।(अनृतं/असत्यं) क, ख, ग
33. मैं व्यवहार में दूसरों के दोष कहता हूँ।(पैशुन्यं/परिवादं) क, ख, ग
34. मैं असंगत बातें करता हूँ।(असम्बद्ध प्रलाप) क, ख, ग
35. मैं जैसा देखता या सुनता हूं, वैसा ही वाणी के द्वारा कहता हूँ।(अविकार वचन) क, ख, ग

<u>कार्मिक स्वभाव</u>

36. मैं कर्म आरम्भ करके विघ्नों के भय से मध्य में छोड़ देता हूँ। क, ख, ग
37. मैं विघ्नों के भय से आरम्भ ही नहीं करता । क, ख, ग
38. मैं अनेक विघ्नों का सामना करते हुए आरम्भ कृत कार्य को पूरा करके ही छोडता हूँ।क, ख, ग

इस प्रश्नावली और निष्कर्ष-विधि का सर्वाधिकार कापीराईट के अधीन संस्कृत विभाग, सनातन धर्मकालेज (लाहौर), अम्बाला छावनी के पास सुरक्षित हैं। प्रयोग से पूर्व संस्कृत विभाग को सूचित करना आवश्यक है।